श्रीमद् भगवद् गीता ज्ञानदाता शिव-शंकर है
[श्लोकों और मुरलियों के महावाक्यों के अनुसार प्रमाण]

श्रीकृष्ण को गीता ज्ञानदाता माना जाता है, यह एक अंधश्रद्धा की बात है; क्योंकि गीता के श्लोकों से यह बात साबित नहीं होती। गीता के श्लोकों के अनुसार श्रीकृष्ण गीतापति भगवान् नहीं है। यह तो कृष्ण के अंध भक्तों ने गीता का भगवान् कृष्ण को बता दिया है। जिसका कारण है- ब्रह्माकुमारियों ने दादा लेखराज ब्रह्मा को साकार गीता ज्ञानदाता बता दिया, जो कि मुरलियों में आए महावाक्यों से साबित नहीं होते हैं। मुरलियों में स्पष्ट है कि गीता ज्ञानदाता दादा लेखराज ब्रह्मा उर्फ़ कृष्ण नहीं है। शिवलिंग जिसको वे निराकार शिव की यादगार मानती हैं; परन्तु शिवलिंग निराकार की नहीं, साकार {सम्पन्न स्वरूप} की यादगार है। निराकार तो बिंदी है, उनकी कोई मूर्ति नहीं बन सकती; पर वो निराकार साकार में आए तब मूर्तिमान कहा जा सकता है। "गीता का भगवान कृष्ण नहीं; शिव है।" (मु.ता. 6.7.71 पृ.4 मध्यांत) क्या निराकार शिव ही सिर्फ गीतापति भगवान् हो सकते हैं? दिखाया है- अर्जुन के रथ में ज्ञान दिया है, तो कोई स्थूल रथ की बात नहीं है। कठोपनिषद् **1.3.3.4** में बोला है- "**आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव च। बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च। इन्द्रियाणि हयानाहुः" अर्थात्** आत्मा को रथी समझ और शरीर को रथ समझ, बुद्धि को सारथी समझ और मन को लगाम समझ, इन्द्रियों को घोड़े समझ। वो निराकार गीता-ज्ञानदाता, अर्जुन के साकार शरीर रूपी रथ में प्रवेश करता है। जिसको गीता में क्षेत्र भी कहा है। "**इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रं इति अभिधीयते। एतत् यः वेत्ति तं प्राहुः क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः॥" (13/1) अर्थात् क्षेत्र है अर्जुन की देह और उसका ज्ञाता है क्षेत्रज्ञ निराकार शिवज्योति।** इन दोनों का ज्ञान ही असली ज्ञान है। निराकार शिव ज्योति को तो सभी मान सकते हैं; परन्तु साकार व्यक्तित्व को भूल जाते हैं। जिसका परिणाम होता है कि भगवान् को सवर्व्यापी, या तो सिर्फ निराकार ही समझ लेते हैं या दादा लेखराज ब्रह्मा को ही साकार रथ समझ लेते हैं; परन्तु उस साकार की पहचान ही निराकार देता है जो उसके सम्पूर्ण स्वरूप को धारण करता है। जैसे सूर्य की रोशनी का ज्ञान सूर्य देता है, वैसे ही गीता-ज्ञान ही पहचान है असली ज्ञानदाता की। "निराकार साकार बिगर कोई भी कर्म नहीं कर सकते। पार्ट बजा नहीं सकते।" (मु.ता. 01.09.71 पृ.1 आदि) जब कर्म नहीं कर सकते, पार्ट नहीं बजा सकते तो ज्ञान कैसे दे सकते हैं? फिर वो साकार कौन जिसके द्वारा गीता-ज्ञान दिया गया? जिसका प्रमाण दे रही है स्वयं श्रीमद् भगवत् गीता और मुरलियाँ; क्योंकि सुप्रीम सोल के द्वारा दिया हुआ ज्ञान, गीता-ज्ञान है 'मुरलियाँ' और मुरलियों में दिया हुआ ज्ञान ही श्रीमद्भगवद् गीता से मेल खाता है।

- एक तरफ कृष्ण का चित्र, दूसरे तरफ शिव का। और पूछना है- अब बताओ, गीता का भगवान कौन? (मु.ता.22.10.77 पृ.2 अंत)

तथ्य	गीता का श्लोक	कृष्ण उर्फ़ दादा लेखराज ब्रह्मा	शिव-शंकर

गीता भगवानुवाच है, कृष्ण उवाच नहीं और ना ही निराकार शिव कृष्ण के तन द्वारा गीता ज्ञानदाता है, वो तो सिर्फ साकार मुकर्रर तन द्वारा है।		**गीता सुनाने वाला तो पुरुषोत्तम संगमयुगी (ब्राह्मण) चाहिए। कृष्ण की आत्मा तो हो न सके, न कृष्ण का शरीर हो सकता है। कृष्ण भगवानुवाच हो न सके। (मु.ता. 4.3.69 पृ.1 आदि)**	**शिव भगवानुवाच है, न कि श्री कृष्ण भगवानुवाच। कृष्ण को भी श्री कहते हैं; क्योंकि उनको श्रेष्ठ बनाने वाला बाप है। (मु.ता. 1.3.03 पृ.1 मध्यांत)**
भगवान् को जन्म-मरण से न्यारा कहते हैं।	**अजः अपि सन् अव्ययात्मा भूतानां ईश्वरः अपि सन्। (4/6)**	कृष्ण का देवकी माता से जन्म लेते दिखाते हैं। • **कृष्ण के तो माँ-बाप थे ना! पतित-पावन है ही एक बाप। <u>जिसको माँ-बाप हैं, वह पतित-पावन हो ना सके। उनको भगवान नहीं कह सकते।</u> (मु.ता. 17.8.65 पृ.3 आदि)**	महादेव के 108 नामों में एक नाम '<u>अ+ज</u>' है। **महादेव का जन्म और मृत्यु नहीं दिखाते हैं। • भगवान का कोई बाप नहीं। गॉडफादर का कोई फादर हो नहीं सकता। (मु.ता. 17.8.65 पृ.3 आदि)** • शंकर तो जन्म-मरण से न्यारा है। **(मु.ता.14.5.70 पृ.2 आदि)**
भगवान् का ही सिर्फ दिव्य जन्म है, जिसको कोई नहीं जानता। जबकि कृष्ण का तो सामान्य रूप से जन्म हुआ है, सभी जानते हैं।	जन्म कर्म च मे दिव्यं...। (4/9) "**न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः।" (10/2)**	**कृष्ण की तिथि-तारीख, समय आदि सब-कुछ देते हैं। (मु.ता. 9.3.67 पृ. 1 आदि)**	शिवरात्रि कहा जाता है, कृष्ण रात्रि नहीं। • **बाप आते भी हैं रात्रि में। कब आते हैं, उसकी तिथि-तारीख कोई नहीं है। तिथि-तारीख उनकी होती है जो लौकिक जन्म लेते हैं। यह तो है पारलौकिक बाप। इनका लौकिक जन्म नहीं है। .....इनका तो कहा ही जाता है दिव्य जन्म। (मु.ता. 9.3.67 पृ. 1 आदि)**

कृष्ण का गर्भ से जन्म दिखाते हैं। सिर्फ एक महादेव है जिनको गर्भ से जन्म नहीं दिखाते हैं। शिव की निराकारी स्टेज का सम्पूर्ण प्रैक्टिकल यादगार शंकर है जो निराकार नहीं; लेकिन निराकारी स्टेज धारण करने वाला है; क्योंकि निराकार शिव प्रवेश करते हैं शंकर में। कृष्ण का बूढ़े रूप में चित्र नहीं दिखाते, शंकर को वृद्ध रूप में भी देखते हैं।	**<u>प्रवेष्टुं</u> च परन्तप॥ (11/54)**	**कृष्ण का तो (मंदिरों में भी) वृद्ध तन नहीं है। (मु.ता. 27.7.88 पृ.2 मध्यांत)**	**आता हूँ, परन्तु बूढ़े तन में प्रवेश करता हूँ। तुम आत्मा छोटे बच्चे के शरीर में प्रवेश करती हो, मैं परमधाम से आता हूँ नीचे पार्ट बजाने। मैं विकारी के गर्भ में नहीं आता हूँ। (मु.ता. 11.5.01 पृ.2 मध्य)**
महद्ब्रह्म अर्थात् परमब्रह्मा में <u>ज्ञान</u> का बीज डालते हैं।	**"मम योनिर्महद्ब्रह्म तस्मिन्गर्भं दधाम्यहम्।"** (गी. 14/3)	**कृष्ण को परमब्रह्म शास्त्रों में नहीं लिखा है।**	शास्त्रों में शंकर को परमब्रह्म बताया।
भगवान् को अकर्ता-अभोक्ता कहते हैं।		**कृष्ण को कर्म करते दिखाते हैं और जीवन के सभी सुखों को भोगते दिखाए हैं शास्त्रों में और दादा लेखराज ब्रह्मा बाबा को भी जीवन के सभी सुख का भोग करते दिखाया है।**	महादेव को चित्र और मूर्ति में बहुधा सदा (अकर्ता&अभोक्ता) याद में बैठा दिखाते हैं।
मुझसे ही सभी की उत्पत्ति होती है और मुझमें ही अंत में सब समा जाते हैं। (गीता)	**"सर्वभूतानि कौन्तेय प्रकृतिं यान्ति मामिकाम्। कल्पक्षये पुनस्तानि कल्पादौ विसृजाम्यहम्॥"** (9/7)	**कृष्ण विष्णु के अवतार हैं। उनकी उत्पत्ति महादेव के लिंग से हुई है।** **(जो कृष्ण स्वयम् रचना है, वो किसी की उत्पत्ति नहीं कर सकता है और कृष्ण उर्फ ब्रह्मा साकार शरीर से भी मौजूद नहीं है जो उनमें सभी प्राणी समा सकें।)**	शास्त्रों में दिखाया है- लिंग ही सृष्टि के आदि में था, जिससे ही सबकी उत्पत्ति हुई है और झाड़ के चित्र में शंकर को ही दिखाया है जिसके द्वारा सभी आत्माएँ परमधाम जा रही हैं, (ब्रह्मा के द्वारा नहीं)।

		• क्रियेटर ब्रह्मा को नहीं कहा जाता। (मु.ता.13.2.75 पृ.2 मध्य) • ब्रह्मा भी रचना है शिवबाबा की। (मु.ता.26.6.70 पृ.1 आदि)	
मेरी अव्यक्त मूर्ति (शंकर) से यह सारा संसार विस्तार को पाया है। (गीता)	**मया ततं इदं सर्वं जगत् अव्यक्तमूर्तिना। (9/4)**	**कृष्ण की कोई भी मूर्ति या चित्र क्राइस्टादि धर्मपिताओं जैसा अव्यक्त रूप में नहीं दिखाया है ना, दादा लेखराज ब्रह्मा का कोई चित्र (फोटो) निराकारी स्टेज का है?** कृष्ण की कोई मूर्ति, चित्र या अव्यक्त नाम होने की कोई यादगार नहीं है।	शंकर के 108 नामों में एक नाम 'अव्यक्त' है। शिवलिंग ही ऐसी इन्द्रिय हीन निराकारी मूर्ति है जो मूर्ति भी है अर्थात् साकार होते हुए भी मन-बुद्धि से निराकारी स्टेज की यादगार में है। इसलिए शंकर के सभी चित्र निराकारी स्टेज के दिखाते हैं।
चरित्र के अनुसार ही चित्र बने हैं।		**कृष्ण कोई योगेश्वर नहीं है। उनका कोई चित्र याद की स्टेज का नहीं है।** **• कृष्ण को भी योगेश्वर कह देते हैं; पर कृष्ण योगेश्वर है ही नहीं। (साकार मु.ता. 5.7.65 पृ.6 मध्य)** **• कृष्ण को योगेश्वर नहीं कहा जाता है। (मु.ता. 30.8.75 पृ.2 अंत)**	योगेश्वर एक महादेव है, जिनकी यादगार चित्र और मंदिर भी हैं। जिनको योगी ही नहीं, आदियोगी भी कहते हैं। • बाप को योगेश्वर कहा जाता है। (रात्रि साकार मु.ता. 3.6.65)
जिस (अव्यक्तमूर्ति महादेव) से यह सारा संसार विस्तार को पाया है, उसको अविनाशी जान।	"**अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम्। विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति॥" (2/17)**	दादा लेखराज ब्रह्मा अभी साकार शरीर से मौजूद (व्यक्त) नहीं है और शास्त्रों में कृष्ण की भी मृत्यु दिखाई है।	महादेव को मृत्युंजय दिखाया है और अकालमूर्त दिखाते हैं। • अकालमूर्त का यह रथ अथवा तख्त खास मुकर्रर है। (मु.ता. 27.7.88 पृ.2 आदि) • अकालमूर्त का बोलता-

			चलता तख़्त है। (मु.ता. 21.7.69 पृ.1 मध्य) ज़रूर चैतन्य है।
साधारण तन में भगवान् आते हैं, इसलिए ना पहचानने के कारण अवज्ञा करते हैं। (गीता)	**"अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम्।" (गीता 9/11)**	कृष्ण को गरीब नहीं दिखाते हैं, ना ही दादा लेखराज ब्रह्मा को गरीब कहेंगे। **"ब्रह्मा बाबा का तो बड़े-बड़े राजाओं के साथ उठना-बैठना होता था, इंग्लैंड की महारानी एलिज़ाबेथ भी उनसे रत्न लेती थीं।" (किताब-थ्री इन वन से)** • मैं कृष्ण (उर्फ़ ब्रह्मा) के (शोभायमान) तन में नहीं आता हूँ। (मु.ता. 13.8.76 पृ.3 अंत)	**शंकर को फ़कीरी वेश में दिखाते हैं। • (शिव सदाज्योति) गरीब निवाज़ है ना! (मु.ता. 28.6.70 पृ.2 अंत)** **• बाप कहते हैं- देखो, भक्तिमार्ग में मुझ शिव को रहने के लिए कितने अच्छे-2 महल बनाते हैं हीरों-जवाहिरातों के और अभी मैं डायरैक्ट आया हूँ तो देखो कहाँ रहता हूँ। कम-से-कम राष्ट्रपति जैसा मकान तो होना चाहिए; परन्तु देखो तीन पैर पृथ्वी भी नहीं मिलती। (मु.ता. 01.05.73 पृ.1 मध्य)** **• मैं बिल्कुल साधारण तन में आता हूँ। (मु.ता. 13.8.76 पृ.3 अंत)**
	त्वं आदिदेवः पुरुषः पुराणः त्वं अस्य विश्वस्य परं निधानं। वेत्ता असि वेद्यं च परं च धाम त्वया ततं विश्वं अनन्तरूप॥ (11/38)	कृष्ण को आदिदेव नहीं कहते हैं। कृष्ण जो विष्णु के अवतार है, विष्णु की उत्पत्ति ही महादेव के लिंग से होती है तो उनको तो आदिदेव नहीं कह सकते हैं। **• उन (कृष्ण) का अंतिम जन्म लेखराज है। वह तो प्रजापिता बन नहीं सकता। (मु.ता. 21.8.73 पृ.5 मध्यांत)**	**• प्रजापिता आदिदेव कहते हैं; परंतु आदिदेव का अर्थ नहीं समझते हैं। ... आदि अर्थात् शुरूआत का। (मु.ता. 4.9.72 पृ.2 आदि) जिस आदि पुरुष को हिन्दुओं में 'आदिदेव', मुसलमानों में 'आदम', जैनियों में 'आदिनाथ', क्रिश्चियन्स में 'एडम' कहा जाता है।**

	"त्वमेव माता च पिता त्वमेव...." पिता अहं अस्य जगतो माता (9/17)	कृष्ण को माता-पिता नहीं कहा जाता है।	'त्वमेव माता च पिता त्वमेव...' शिव के मंदिर में जाकर ही कहते हैं; इसलिए शंकर की ही सिर्फ अर्धनारीश्वर मात-पिता के रूप में भी यादगार दिखाते हैं।
गीता-ज्ञान व्यास के द्वारा मिला है। वो कोई ब्रह्मा बाबा नहीं है। उनके द्वारा मुरलियों को पढ़ा गया; पर व्याख्या नहीं हुई। सिर्फ ज्ञान बना; पर अमृत नहीं। गीता-ज्ञान को तो अमृत कहा जाता है।	"**व्यासप्रसादात्**" (18/75)	• कृष्ण (उर्फ़ ब्रह्मा) भगवान हो न सके। (मु.ता. 14.11.71 पृ.3 मध्यांत) • **गीता को ज्ञानामृत कहना भी राँग है। भल बाबा ने इतने दिन नहीं कहा। (मु.ता. 6.3.67 पृ.2 मध्यादि)**	• **व्यास को भगवान कहते हैं। (साकार मु.ता. 3.6.65 पृ.4 आदि)** • व्यास कहा जाता है (कथा-) वाचक को, जो मुरली चलाते हैं। (मु.ता. 4.11.65 पृ.1 अंत) • शंकर ने पार्वती को अमरकथा सुनाई। क्या वह शंकर पार्वती दूसरी थी। अब वास्तव में है कुछ भी नहीं। तुम सब पार्वतियाँ हो। अमरकथा तुमको सुना रहे हैं। (मु.ता. 9.5.70 पृ.3 अंत) पार+वती = सबको पार लगाने वाली।
विनाश करना शंकर का ही काम है, कृष्ण महाविनाश नहीं कर सकते हैं।	**यस्य न अहङ्कृतो भावो बुद्धिः यस्य न लिप्यते। हत्वा अपि स इमान् लोकान् न हन्ति न निबध्यते॥ (18/17 गीता)**	• विनाश कराना यह कोई कृष्ण का काम नहीं है। (मु.ता. 12.4.72 पृ.2 अंत)	• **बाप विनाश उनसे कराते हैं, जिस पर (याद की पावर से) कोई पाप न लगे। (मु.ता.29.4.70 पृ.1 मध्य)**
	श्रीभगवानुवाचः- 'कालोऽस्मि' (11/32) अर्थात् मैं काल हूँ।	**जो स्वयं अपने काल से मुक्त नहीं हो सकता, वो दूसरों के लिए काल नहीं बन सकता है। कृष्ण को महाकाल या काल भी नहीं कहा है।**	सिर्फ महादेव को ही महाकाल कहा जाता है। यादगार मंदिर महाकालेश्वर भी है।

		उनकी तो पाँव में तीर लगने से मृत्यु हुई।	
ईश्वर ही सबका भरण-पोषण करता है और सर्व सम्बन्धी है और सारी दुनियाँ का बीजरूप बाप (लिंगमूर्ति) भी है।	**गतिः भर्ता प्रभुः साक्षी निवासः शरणं सुहृत्। प्रभवः प्रलयः स्थानं निधानं बीजं अव्ययं॥ (9/18)**	**कृष्ण सबके भरण, पोषण और विनाश कर्ता नहीं हो सकते हैं।**	स्थापना,पालना,विनाश का कार्य सिर्फ साकारी सो निराकारी स्टेज वाले महादेव के द्वारा ही हो सकता है।
गीता में 3 गुण से परे जाने का ज्ञान है, जबकि वेद तीन गुण वाले हैं। रजोगुण उत्पन्न ही द्वापुर से होता है; इसलिए गीता वेदों से भी पहले है। **वही सारे वेद-शास्त्र, बाइबल, कुरान आदि की भी आदि माई-बाप है।** **सभी धर्म के लोग गीता का लोहा मानते हैं; क्योंकि सभी धर्मशास्त्रों का सार गीता में है।**	**त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन। निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान्॥ (2/45)** **'गुणतीत-कल्याण कल्पान्तकारी' शंकर के लिए भी कहा गया है।**	**कृष्ण उर्फ़ ब्रह्मा या विष्णु को उत्पत्ति और पालना करते दिखाया है। उत्पत्ति रजोगुण से होती है और कृष्ण के चरित्र से कामना उत्पन्न होती है; इसलिए रजोगुण के बाद ही तामसगुण अवश्य आता है। इसलिए 3 गुणों से परे जाने का ज्ञान कृष्ण नहीं दे सकते हैं, जो स्वयम् गुणों से परे ना हो।**	महादेव को सदा आसक्ति से परे अनासक्त दिखाया है जो 3 गुणों से परे है।
	जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदं॥ (3/43) **महाशनो महापाप्मा विद्धि एनम् इह वैरिणं॥ (3/37)**	कृष्ण ने काम पर जीत नहीं पायी। उन्होंने काम का अंत नहीं किया, और ही काम को जन्म दिया अर्थात् कामना को बढ़ाया है।	महादेव को ही कामदेव को भस्म करते दिखाते हैं। जिसने स्वयम् के कामविकार को भस्म किया हो, वो ही काम-महाशत्रु का ज्ञान दे सकता है।

श्रीमद् भगवद् गीता में भगवान् के स्वरूप का वर्णन बताया है। उन श्लोकों में आए नामों से सिर्फ महाकाल रूप महादेव के ही मंदिर हैं। कृष्ण के तो सभी यादगार मंदिर छोटे बच्चे का मूर्ति रूप हैं। वह कैसे महाकाल विकराल रूप हुआ ?

1-virateshwar temple:- विराटः,विराटश्च sohagpur,shahdol,M.P.	2-Adeeswar temple:- भूतादिम्(9/13) (Chennai)	3-panchamukh shivling temple:- विश्वतोमुखं(9/15) Sambalhedda village, mujaafarnagar dist.	4.sri Agneswarar temple:-अहं अग्निः(9/16) Nalladai,India.	5.Vaitheeswaran Temple:- अहं औषधं (9/16) Tamilnadu.
6.Baba Baidyanath Dham Jyotirlinga:- अहं औषधं(9/16) jarkhand.	7.Agneeswarar temple, kanjanur, Tamil nadu:- अहं अग्निः(9/16)	8.Jagadeswar temple :- जगतः(9/17) Raigad fort. 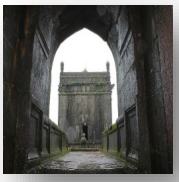	09.Arthanareeswarar temples(Matha,pitha) :-पिता, माता(9/17) Thiruchangode in tamilnadu.	10.Yamadharmaraj - Dharmeshvar Mahadev Temple:- धाता(9/17);(10/29),(11/39) Himachalpradesh.
11.pavithreswaram srimahadev temple,kerala:- पवित्रं (9/17)	12- Omkareswara swamy temple:- ओंकारः(9/17) kurnool,A.P	13.perur patteeswara temple:- भर्ता(पति)(9/18) Coimbatore, Tamilnadu and in satara, Maharashtra.	14.sri sarneswarji mahadev temple :- शरणं (9/18) Sirohi.	15.suryeshwara temple, Bakrabail,pathuru,karnataka:-तपा(9/19) ◆ Somasuryagnilochanaya:-तपा(9/19)108 shiv name

16.Amrutheswara temple:- अमृतं(9/19) Mysore, Karnataka.	17.Amarnath temple and mrutyunjayeshwar temple (kanchipuram T.N):- अमृतं(9/19) (Jammu and Kashmir)	18.Brahmeswara temple:- ब्रह्म(10/12) Bhubaneswar, odissa.	19.parameswara vinnagaram temple:- परं(10/12) kanchipuram.	20.Adeeswar temple:- आदिदेव(10/12,15,32) chennai.
21.Sivakesava temple:- केशव(10/14) Guntur, Andhrapradesh. 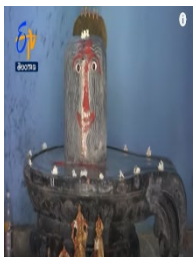	22.Bhuteswara mahadev temple:- भूतभावन, भूतेश(10/15) Gariyabandh and also in haryana.	23.Sri Sri Devadidev mandir:- देवदेव(10/15) hill station kulti.	24.vibhuthi nath temple:- विभूतिभिः(10/16) Shrawasthi,U.P.	25.siva Vishnu temple:- विष्णुः(10/21) lolla,A.P.
26.Raaveswara temple:- रविः(10/21) Chennai.	27.somnaath mahadev temple:- शशी(10/21) Gujarat.	28.Maneswar Temple:- मनः(10/22) (Sambalpur district, Odisha)	29.Sri rudreswara swami temple :- रुद्राणां(10/23) Kondapaka, siddipet,A.P and Veyisthambala temple,warangal, A.p and	30.Kubereshwar Mahadev Temple:- वित्तेशः 10/23) (Vadodara, Gujarat). 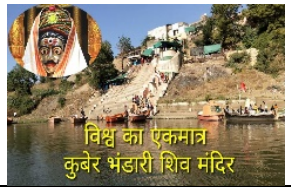

			harlem,Goa. 	
31.sagareswara beach and temple:-(समुद्र)10/24 sindhu durga, Maharastra. 	32.sri kapileswara swamy temple:-कपिलो मुनि:(10/26) Thirupathi, A.P. 	33.kapileswara temple:-कपिलो मुनि:(10/26) Thirupathi,Chennai,Belgaum, Bhubaneswar) 	34.sarpeswara mandhir:-सर्पाणाम्(10/28) Orissa. ◆भुजंगभूषण - सांपों के आभूषण वाले(10/28)108 names 	35.Nageswara mahadev temple:-नागानां(10/29) Dwaraka, Gujarat.
36.Ananthes hwara temple:अनन्त :(10/29) kerala.. 	37.Mahakale swara temple (jyothirling):-काल:(10/30) Ujjain,M.P ◆ Mahakaal:-काल:10/30(108 shiv names) 	38.Pashupatinath:- Nepal मृगाणाम्(10/30) मृगेन्द्र:(10/30) (Danara, Odisha) 	39.Rameswaram Temple:-राम:(10/31) (Tamilnadu). 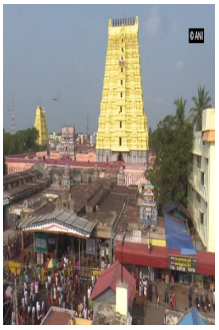	40.Gangeswara temple:-जाह्नवी(10/31) (Diu, Gujarat). ◆Gangadhar:-shiv 108 names(10/31)

41.dhandeeswaram temple:-द्वंद्व:(10/33) pudukkottai, tamilnadu	42.Kaleswara temple:-काल:(10/33) Jayashankar, Bhupalpally Dist.	43.sri mahadev temple:-10/34 Himachal pradesh,Mandi.	44.sri tejeswar mahadev temple:-तेज:(10/36)Kavangarai,Tamilnadu	45.Vyasheswar Mahadev:-10/37(Vadodhara, Gujarat)
46.Sukreswar Temple:-उशाना कवि:(10/37) (sukreswara temple, Varanasi) 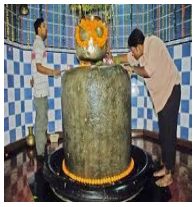	47.Arjuneswarar temple(Dhanunjaya):-10/37 (Tamilnadu)	48.Gopeswar Mahadev temple:-गुह्यानां(10/38) (vrundhavan,U.P)and at gharwal, uttarakand.	49.Tejeshwaran mahadev temple:-तेजोंऽशसम्भवम्(10/41) uttarakand,Tamilnadu,Rajasthan	50.kamelshwar temple:-कमलपत्राक्ष(11/2) Srinagar, uttarakhand.
51.Rudreswa temple:-11/6 Warangal, A.p and at Dehradun.	52.parameswara vinnagaram temple:-परमं ऐश्वरं(11/9) kanchipuram.	53.Hrushikesh temple:-हृषीकेश(11/36) Uttarakanda. 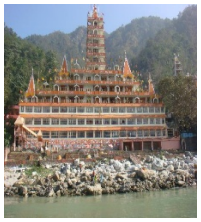	54.yogeswar temple:-योगेश्वर(11/4,11/8) Patora dam, Odissa.	

सिर्फ इतने ही नहीं, और भी ढेरों श्लोकों और यादगार रूप में प्रमाण मौजूद हैं कि गीता ज्ञानदाता शिव-शंकर भोलेनाथ ही हैं। आप खुद श्लोकों के आधार पर रिसर्च करके देखिए और गीता-ज्ञान को श्रीकृष्ण के चरित्र से मिलाप करके देखिए तो प्रमाण स्वयम् सामने आएगा। फिर भी अंधश्रद्धा और परम्परा से चली आ रही मान्यता के कारण कृष्ण को ही गीता ज्ञानदाता मानते हैं; क्योंकि अगर 1 झूठ को 100 बार बोला जाए तो वो झूठ भी सत्य जैसा लगने लगता है; पर सत्य लग सकता, सत्य हो नहीं सकता। उस असत्य का विनाश निश्चित है; क्योंकि गीता में कहा– "नासतो विद्यते भावो..." (2/16)

ब्रह्माकुमारियाँ दादा लेखराज ब्रह्मा को साकार गीता ज्ञानदाता भगवान मानती हैं, जबकि मुरलियों में ढेरों स्पष्ट प्रमाण हैं कि कृष्ण उर्फ़ दादा लेखराज ब्रह्मा गीता ज्ञानदाता नहीं –

• ब्रह्मा ही फिर (सतयुगादि में) कृष्ण बनता है। (मु.ता. 3.3.73 पृ.1 मध्यांत) • यह दादा भी राजयोग सीख रहे हैं और कृष्ण बनने वाले हैं। (रात्रि मु.ता. 23.1.67 पृ.1 अंत)	• शंकर न होता तो हम (शिवबाबा को) शंकर के साथ मिलाते भी नहीं। चित्र बनाया है तो मुझे भी शंकर साथ मिला दिया है। शिव-शंकर महादेव कह देते तो (त्रिमूर्ति में) महादेव बड़ा हो जाता। (मु.ता. 26.6.70 पृ.2 अंत) • शिव के मन्दिर में जाकर देखो, वहाँ लिंग रखा है। ज़रूर चैतन्य था तब तो पूजा होती है। (मु.ता. 27.6.71 पृ.2 आदि) • "शंकर को भी अपना शरीर है।" (मु.ता.14.4.71 पृ.1 मध्य)
• कृष्ण को रुद्र नहीं कहेंगे। (मु.ता. 19.6.92 पृ.1 अंत)	• भगवान को रुद्र भी कहा जाता है। (मु.ता. 19.6.92 पृ.1 अंत) • जो पहले राम अथवा रुद्र बाबा के गले का हार बना होगा, फिर विष्णु के गले का हार बनेगा। (मु.ता. 03.08.72 पृ.3 मध्य)
• कृष्ण को ज्ञान (का अगाध) सागर नहीं कह सकते। (मु.ता. 25.8.65 पृ.3 आदि)	• रुद्र है ज्ञान-सागर। (मु.ता. 8.3.73 पृ.3 मध्यांत)
• कृष्ण को ज्ञान-सागर, पतित-पावन तो कहते नहीं। (मु.ता. 7.9.63 पृ.2 आदि)	• ज्ञान-सागर शिवबाबा को कहा जाता है। (मु.ता. 21.7.71 पृ.2 अंत)
• भगवानुवाच श्रीकृष्ण तो नहीं पढ़ाते। ज्ञान का सागर श्रीकृष्ण थोड़े ही है। (मु.ता. 12.2.72 पृ.2 मध्य)	• ज्ञान के सागर अथवा हे ज्ञान-सूर्य बाबा, भगवान को बाबा कहा जाता है ना! (मु.ता. 13.4.71 पृ.1 आदि) • राम शिवबाबा को कहा जाता है। (मु.ता.7.9.68 पृ.3 मध्यादि) • शिवबाबा आते भी ज़रूर हैं; परन्तु उनके बदली कृष्ण को गीता का भगवान कह दिया है। (मु.ता. 14.7.71 पृ.1 आदि)
• कृष्ण तो पतित-पावन हो न सके। (मु.ता. 3.9.70 पृ.2 मध्यांत)	**• भगवान एक ही ज्ञान-सागर पतित-पावन है। (मु.ता. 3.9.70 पृ.2 मध्यांत)**
• कृष्ण भगवान है ही नहीं। (मु.ता. 13.11.68 पृ.3 मध्यांत)	**• राम भगवान को कहा जाता है। (मु.ता. 8.6.74 पृ.1 आदि)**

• यह ईश्वर बाप बैठ पढ़ाते हैं। कृष्ण को ईश्वर थोड़े ही कहेंगे। यह भी भूल है। (मु.ता.18.9.68 पृ.3 अंत)	• राम अर्थात् ईश्वर। (मु.ता. 2.9.69 पृ.2 आदि)
• कृष्ण को सर्वशक्तिवान नहीं कहा जाता। (मु.ता. 11.11.72 पृ.6 अंत)	• सर्वशक्तिवान तो एक बाप ही है, जिसको राम भी कहते हैं। (मु.ता.20.2.74 पृ.3 आदि)
• कृष्ण तो बच्चा (बुद्धि) है। (रात्रि मु.ता. 11.3.68 पृ.1 आदि)	• राम कहा जाता है बाप को। (मु.ता. 6.9.70 पृ.3 मध्य)
• अगर कहे कृष्ण भगवानुवाच है; परन्तु वह तो है सतयुग का फर्स्ट प्रिन्स। वह राजयोग कैसे और किसको सिखावेगा। गीता सुनाने वाला तो पुरुषोत्तम संगमयुगी चाहिए। (मु.ता. 4.3.69 पृ.1 आदि)	• राजयोग है। ब्रह्मा वा कृष्ण नहीं पढ़ाते हैं। यह तो परमपिता परमात्मा पढ़ाते हैं। पतित-पावन वह बाप है। (मु.ता. 12.2.72 पृ.2 आदि)
	• गीता तो परमपिता परमात्मा ने सुनाई। (मु.ता. 15.11.72 पृ.1 आदि)
• भगवानुवाच। कृष्ण तो हो न सके। असम्भव है जो कृष्ण आकर राजयोग सिखलावे। (मु.ता. 27.6.72 पृ.1 अंत)	• 5000 वर्ष पहले भी बाप ने समझाया है- झट समझ जाएँगे। गीता की बात करते हैं, कृष्ण को बाप थोड़े ही कहेंगे। (मु.ता. 27.9.90 पृ.2 आदि)
	• शंकर भी एवर पूज्य है। वह कब पुजारी बनते नहीं। (मु.ता. 28.8.71 पृ.2 मध्य)
• गीता है सर्व शास्त्रमयी शिरोमणि। बाप के मुख से निकली माता। माता से निकला कृष्ण बच्चा। अगर उसी कृष्ण को माता का पिता बना दे, तो यह कितनी मूर्खता है। (मु.ता. 5.1.73 पृ.2 मध्य)	• गीता माता से भगवान ने राजयोग सिखलाया। कृष्ण की आत्मा अगले जन्म में राजयोग सीख कृष्ण बने। तुम अभी गीता से पैदा हो रहे हो ना! माता है ना! गीता का पति है शिवबाबा। (मु.ता. 5.1.73 पृ.2 मध्य)
• कोई भी शास्त्र में नहीं है। श्रीकृष्ण भगवानुवाच तो लिख दिया है। परन्तु न कृष्ण की गीता है, न उनका भागवत है। (मु.ता.24.2.87 पृ 3 मध्य) • श्रीकृष्ण है स्वर्ग का पहला राजकुमार। यह बेहद का बाप इनको राज्य-भाग्य देते हैं। बाप जो नई दुनिया स्वर्ग स्थापन करते हैं, उसमें श्रीकृष्ण नंबर वन प्रिन्स है। (मु.ता. 14.10.84 पृ. 2 आदि)	• गीता का भगवान कृष्ण नहीं, शिव है। शिवबाबा रचयिता है और कृष्ण है रचना। .... स्वर्ग का वर्सा देने वाला, स्वर्ग का रचयिता ही हो सकता है। (मु.ता. 3.5.91, 8.5.01 पृ. 1 आदि)
• निराकार परमात्मा सभी धर्म वालों का पिता है। कृष्ण को सभी नहीं मानेंगे। (मु.ता. 16.5.98 पृ. 1 आदि)	
• कन्याओं का कन्हैया बाप तो मशहूर है। कृष्ण कोई कन्याओं का बाप नहीं है। (मु.ता.19.3.87 पृ.1 मध्य)	

• कृष्ण को लार्ड कृष्णा भी कहते हैं। भगवान को कभी लार्ड नहीं कहेंगे, उनको गॉडफादर ही कहते हैं। (मु.ता. 28.1.99 पृ. 2 आदि)	• मुसलमान लोग बाप नहीं कहते हैं। वह फिर अल्ला मियाँ कहते हैं। ....सभी से अच्छा अक्षर भारत में है। परमपिता परमात्मा। परमपिता कहने से ही शिवलिंग याद आवेगा। यूरोपियन लोग गॉडफादर कहते हैं। (मु.ता. 13.1.69 पृ.1 अंत)
• यह हिस्ट्री-जाग्रफी का राज़ गीता का भगवान बैठ समझाते हैं। भगवान की महिमा अलग, कृष्ण की महिमा अलग है। कृष्ण को मनुष्य-सृष्टि का बीजरूप, वर्ल्ड आलमाइटी अथॉरिटी नहीं कहेंगे। वर्ल्ड आलमाइटी अथॉरिटी एक है। सूर्यवंशी की महिमा अलग है, चन्द्रवंशी की महिमा अलग है। (मु.ता. 20.3.03 पृ. 3 मध्य)	
परन्तु उस साकार पार्टधारी के महत्व को छुपा दिया है; इसलिए मुरली में बोला है– 'बाप की लाश गुम कर दी है'। • "त्रिमूर्ति भी दिखाते हैं। सिर्फ़ शिव को उड़ा दिया है, उनका विनाश कर दिया है। ठिक्कर-भित्तर में ठोक, उनका लाश गुम कर दिया है।" (मु.ता.10.9.73 पृ.1 मध्य)	

गीता ज्ञानदाता सदा पूज्य महादेव ही है, ना कि पुजारी कृष्ण जो सिर्फ बच्चे के रूप में दिखाए जाते हैं।

ॐ शांति